इकाई 6 पर्यावरणीय मापदंड और पर्यटन

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 पारिस्थितिकी पर्यटन

6.3 पर्यावरण पर पर्यटन का प्रभाव

6.4 समाधान

6.5 सारांश

6.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

बढ़ते हुए पर्यटन के कारण, जो आर्थिक और सामाजिक विकास का साधन है, पर्यावरण को बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप यह विश्लेषण कर सकेंगे कि:

- पर्यटन और संबंधित कार्यों के कारण पर्यावरण का ह्रास होता है,
- पर्यावरण पर पारिस्थितिक पर्यटन का प्रभाव, पड़ता है, और
- स्थिति से प्रभावी रूप से किस प्रकार निपटा जा सकता है।

6.1 प्रस्तावना

पर्यटन की विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ पर्यावरण को प्रभावित करती हैं। पर्यावरण और पर्यटन एक दूसरे से बहुत जटिल रूप से अंतर्संबंधित हैं। भारत जैसे देश में निर्धनता और आर्थिक वृद्धि दोनों ही पर्यावरणीय चुनौती प्रस्तुत करते हैं। पर्यावरण के लिए शायद भूख, गरीबी और आकाल से बुरी बात और क्या हो सकती है ? आज जीवित रहने के प्रयास में मनुष्य अपने आने वाले कल के परित्याग और अपने पर्यावरण के अति उपभोग के लिए विवश हो गए हैं।

हम जैसे विकासशील देशों के लिए पर्यावरण बहुत अधिक चिंता का विषय है क्योंकि जनसंख्या का अधिकतर भाग मजबूरन प्राकृतिक संसाधनों पर ही निर्भर है। उनमें से बहुत से लोगों को सोते, तालाब, कुँए या संभवत: किसी सार्वजनिक हैंडपम्प तक, जिनसे सैकड़ों लोगों का काम चलता है, पीने का पानी लेने और नहाने धोने के लिए जाना पड़ता है।

इस इकाई में हम कई ऐसी विधियों की चर्चा करेंगे जो पर्यावरण को बचाने में सहायता कर सकता है। हम उन विधियों का भी विश्लेष्ण करेंगे जिनसे पर्यटन पर्यावरण को प्रभावित करता है और उन जटिलताओं का भी जिक्र करेंगे जो पर्यटन के अधिक फैलाव के कारण पैदा होते हैं।

6.2 पारिस्थितिकी पर्यटन

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और सांस्कृतिक और विरासत संसाधनों की सुरक्षा सार्वभौमिक चिंता का विषय बन चुकी हैं और इस चिंता के प्रति वचनबद्ध लोगों, संगठनों व देशों की संख्या बढ़ती जा रही

है। पर्यटन के उत्तरदायी होने के लिए, पर्यटन के परिमाण और पर्यटन गतिविधियों तथा उपभोग में लाए जा रहे हैं और विकसित किए जा रहे संसाधनों की संवेदनशीलता और वहन क्षमता के बीच संतुलन अवश्य स्थापित करना चाहिए। इसमें भौतिक पर्यावरण दोनों के संसाधन सम्मिलित होते हैं। पर्यावरणीय सुरक्षा में वहन क्षमता सबसे महत्वपूर्ण धारणा है। संसाधनों पर हानि रहित प्रभाव, पर्यटक संतोष को कम किए बिना या उस क्षेत्र के समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना किसी स्थान का अधिकतम उपयोग में लाया जाना उस स्थान की क्षमता कहलाती है। विश्वस्त पर्यटन विकसित करते समय पर्यावरण की उत्कर्षता बनाए रखना न केवल वांछनीय है अपितु पर्यटक का संतोष कायम रखने के लिए भी जरूरी है। यदि पर्यटन उत्पाद के स्तर में गिरावट आती है तो वह अन्ततोगत्वा पर्यटन अर्थव्यवस्था में ही गिरावट लाएगा।

पर्यावरणीय पर्यटन प्रकृति पर आधारित पर्यटन है जो प्रकृति के अपेक्षाकृत अछूते इलाकों के प्रत्यक्ष आनन्द से संबंधित है। इस प्रकार के पर्यटन के पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के लिए स्थान विशेष की उपयुक्तता आवश्यक है। साथ ही साथ इसे प्राकृतिक पर्यावरण में स्थाई ह्रास का साधन नहीं बनना चाहिए।

पर्यावरणीय पर्यटन बड़ा व्यवसाय है। इससे विदेशी मुद्रा भी अर्जित की जा सकती है और प्रकृति तथा वनप्राणियों की सुरक्षा के लिए आर्थिक अर्जन भी हो सकता है। किन्तु पर्यावरणीय पर्यटन, उन संसाधनों को, जिस पर वह निर्भर है, तबाह कर देने की आशंका भी उत्पन्न करते हैं। पर्यटन नौकाएं एन्टार्कटिका के जल में कूड़ा-कचरा फैलाती हैं, राष्ट्रीय उद्यानों में वहाँ के कर्मचारी वन्यप्राणियों को उत्पीड़ित करते हैं या पर्यटकों के झुण्ड संवेदशील क्षेत्रों को रौंदते हैं। इस प्रकार की गतिविधियाँ प्रकृति की जीवन क्षमता को संकट में डालती हैं।

पर्यावरण मित्र : वे लोग जिनके कार्य पर्यावरण के विशेष संतुलन को नष्ट नहीं करते

वस्तुत: प्रत्येक पर्यावरण में प्रकृति आधारित पर्यटन को सहारा देने की क्षमता है और लगभग प्रत्येक देश में इस दिशा में विशेष संभावनाओं के मूल्यांकन के प्रति रुचि बढ़ती जा रही है। प्रकृति आधारित पर्यटन के विषय में होने वाली परिचर्चाओं में अक्सर प्रमाण के बिना ही यह मान लिया जाता है कि ऐसा पर्यटन पर्यावरण-मित्र होता है। यह तथ्य सत्य से परे है और यदि कुछ अन्य प्रकारों के पर्यटन की अपेक्षा यह आदर्श प्रतीत को हो तो भी बहुत सी महत्वपूर्ण समस्याएं हैं। इनमें से बहुत सी समस्याओं को एक साथ उच्च स्तरीय प्रबंध की आवश्यकता के रूप में पहचाना जा सकता है। इस पर हम अगले भाग में सविस्तार विचार करेंगे।

बोध प्रश्न 1

1) पर्यावरण के संरक्षण में वहन क्षमता किस प्रकार सहायता करती है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पारिस्थितिकी पर्यटन किस प्रकार पर्यावरण पर सकारात्मक अथवा नकारात्मक प्रभाव डालता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.3 पर्यावरण पर पर्यटन का प्रभाव

पर्यटक कई उद्देश्यों से यात्रा करते हैं और विभिन्न प्रकार के पर्यटन स्थल इन उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होते हैं। प्रत्येक पर्यटन स्थल की पर्यावरण संबंधी अलग-अलग विशेषताएं होती हैं, मसलन:

- समुद्र का तटीय क्षेत्र और बीच
- नौका विहार क्षेत्र और आर्द भूमि
- पर्वत और बीहड़ क्षेत्र
- अन्तर्देशीय ग्रामीण क्षेत्र, शहरी क्षेत्र, और
- छोटे छोटे द्वीप

पारिस्थितिक पर्यटक (जिनकी मुख्य रुचि प्राकृतिक पर्यावरण में होती है) अक्सर विश्व के मोहक और दूरवर्ती शांत क्षेत्रों की ओर आकृष्ट होते जाते हैं। दूसरे देशों के अधिक विविधता वाले लोग सहयात्री बनकर पूर्व नियोजित पारिस्थितिक पर्यटन में शामिल होकर यात्रा करते हैं, हालाँकि संयुक्त राज्य से प्रारंभ होने वाले पारिस्थितिक पर्यटन में अवकाश प्राप्त एकांत प्रिय और कई अकेली महिलाएं भी इसमें शामिल होती हैं। 30 और 40 वर्ष की आयु के जोड़े ज्यादातर स्वतंत्र पारिस्थितिक पर्यटन के लिए निकलते हैं। विद्यालयों में विद्यार्थियों का समूह और वैज्ञानिकों का दल भी विकासशील देशों के भ्रमण के लिए निकलते हैं और ये उल्लेखनीय विपणन क्षेत्र हैं। यहाँ विपणन क्षेत्र से तात्पर्य उन संभावित पर्यटकों की किस्मों से है जिन्हें जनसांख्यिकीय (जैसे आयु, आय, जन्म स्थान), विशेष रुचि या पर्यटन प्राथमिकताओं के अनुसार विभक्त किया जाता है। भारत में भी पारिस्थितिक पर्यटन के प्रति धीरे धीरे जागरूकता बढ़ रही है। पर्यटन उद्योग रोजगार उपलब्ध कराता है, विदेशी पूंजी अर्जित करता है, पूंजी निवेश को प्रेरित करता है, छोटे व्यापार के अवसर पैदा करता है और सार्वभौमिक आर्थिक व राजनैतिक संयोजन को प्रोत्साहन देता है। पर्यटन तेल और मोटर गाड़ियों सहित तीन प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के वर्गों में से एक है। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। यदि प्रति वर्ष अधिकाधिक राष्ट्र और समुदाय पर्यटन को विकसित करने के लिए उत्सुक हैं और इस उद्योग द्वारा प्रदत्त संभावित सम्पन्नता से लाभान्वित होना चाहते हैं।

जैसा कि हमारी संवैधानिक धाराओं, पर्यावरणीय कानूनों और योजना उद्देश्यों से स्पष्ट है कि विकास और प्रगति के साथ-साथ पर्यावरणीय सुरक्षा बनाए रखने के सचेत प्रयास किए गए हैं। फिर भी वर्षों से पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते हुए दबाव और उसे चौंका देनेवाले नतीजे बढ़ते हुए अनुपात में स्पष्ट रूप से सामने आते जा रहे हैं। यह नतीजे, विकास के लाभ को कम करके, उन गरीबों के जीवन स्तर को, जो परोक्ष रूप से संसाधनों पर निर्भर हैं, बदतर बना रहे हैं। निम्नलिखित सारणी द्वारा पर्यटन पर पर्यावरणीय प्रभाव स्पष्ट हो रहा है।

	पर्यटन प्रचलन	प्रभाव
जल	कूड़े कचरे और मलजल की निकासी झीलों, नदियों और समुद्री तटों में, पर्यटन पोत या नौकाओं से तेल की निकासी आदि	संदूषण, स्वास्थ्य के लिए संकट, समुद्री पौधे और जीव जंतु का विनाश जलाशयों में विशाक्तता की वृद्धि, समुद्री खाद्य में संदूषण आदि
वायुमंडल	पर्यटन स्थल की ओर यात्रा में वृद्धि। मोटर, कार, जहाज, ट्रेन, (वायुयान)	वायु और ध्वनि प्रदूषण, पौधों के जीवन पर हानिकारक प्रभाव, मनोरंजन के मूल्यों की क्षति।
वनस्पति	मनोरंजन स्थल के निर्माण हेतु वृक्षों की कटाई, उद्यानों और वनों में आग का विचारहीन इस्तेमाल, उद्यानों और वनों में बढ़ता यातायात, फूलों और पौधों और कवक का संग्रहण।	वन्य सम्पदा की क्षति, पौधों का निरंतर विनाश, वन्य क्षेत्रों में अग्निकाण्ड, पौधों के जीवन पर प्रभाव।
मानव बस्तियाँ	होटलों, दुकानों आदि का निर्माण और विस्तार	जनविस्थापन, यातायात का संकुलन, बढ़ा हुआ प्रदूषण आदि
स्मारक	मनोरंजन के उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल, पर्यटकों को देखने महत्वपूर्ण स्थानों का अत्यधिक उपयोग	अतिसंकुलता, विरूपण सुरक्षा के लिए बाधा आदि।

पर्यावरण ह्रास में बहुत से कारक सहायक होते हैं। कई कारक पर्यटन के विकास के साथ-साथ जमा होते चले जाते हैं और प्रत्येक कारक द्वारा पहुँचाई गई हानि को अलग-अलग पहचानना और मापना हर बार संभव नहीं होता। समग्रता में देखें तो मनुष्य पृथ्वी की वहन क्षमता की सीमा पार कर गया है, अत: इस वहन क्षमता को बढ़ाने के लिए आवश्यक कार्यवाई करनी होगी और ज्यादा से ज्यादा समर्थन प्राप्त करने के लिए।

6.4 समाधान

प्राकृतिक पर्यावरण को क्षति पहुंचाए बिना उत्तरदायित्वपूर्ण पर्यटन के विकास के लिए पर्यटन से सम्बद्ध निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :

- वहनक्षमता के मूल्यांकन और आवश्यक सुविधाओं जैसे परिवहन, जल, इंधन और स्वास्थ्य रक्षा के आधार पर पर्यटन को प्रोत्साहन देना,
- पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुकूल और स्थानीय लोगों का जीवन शैली को प्रभावित किए बिना पर्यटन को विकसित करना,
- पर्यटन के अविवेकपूर्ण विकास पर प्रतिबंध और संवेदन शील क्षेत्रों जैसे पहाड़ी ढालों, द्वीपों, तटीय क्षेत्रों, राष्ट्रीय उद्यानों और अभयारण्यों में पर्यटन गतिविधियों के सख्त नियम ।

पर्यटकों का अनुभव क्षेत्र और प्रभाव विस्तृत होता है। अत: निम्नलिखित कार्यों के लिए उन्हें लक्ष्य बनना चाहिएँ :

- जागरुकता बढ़ाना,
- पर्यावरणीय उपायों के लिए समर्थन जुटाना,
- व्यक्तिगत व्यवहार में परिवर्तन, और
- उत्तरदायित्वपूर्ण विकास की वकालत।

उत्तरदायित्वपूर्ण विकास के सिद्धांत और आचरण के लिए उनका समर्थन पर्यटन व्यवसाय और सरकार के प्रत्येक स्तर के लिए उत्प्रेरक का काम दे सकता है। पर्यावरणीय सुरक्षा के समर्थक, पर्यटन के उत्तरदायित्वपूर्ण विकास के लिए आवश्यक परिवर्तनों के संदर्भ में भी सार्थक भूमिका निभा सकते हैं क्योंकि विभिन्न समूह किसी भी समय समझदारी के विभिन्न स्तरों पर हो सकते हैं। परिवर्तन की प्रक्रिया रेखीय होने की अपेक्षा कुंडली की तरह अधिक वृत्तीय होती है। इस प्रक्रिया में कई अवयव हैं और उनमें से हर एक को उस समय तक दोहराना चाहिए जब तक उन्हें समझ न लिया जाए, मान न लिया जाए और अलग-अलग क्षेत्रों में मिला न लिया जाए। जैसे :

- सारी दुनिया में विशिष्ट स्थानों पर पर्यावरणीय गुणवत्ता की स्थिति निश्चित कर लेनी चाहिए। योग्य विशेषज्ञों द्वारा खतरों, आपदाओं और वायु तथा जल की गुणवत्ता, ध्वनि के स्तर, पर्यावरणीय संकट और भवनों उसके आसपास के इलाके के आकर्षणों के संभावित नतीजों का मूल्यांकन कर लिया जाना आवश्यक है। मौजूदा कठिनाइयों में से यह एक है कि पर्यावरणीय समस्याओं के आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यों का सही निर्धारण नहीं हो पाता और मूल्य-लाभ विश्लेषण में इन का पर्याप्त रूप से ध्यान नहीं रखा जाता। उदाहरणार्थ किसी संकटापन्न प्रजाति, किसी सांस्कृतिक परम्परा या किसी अछूते वर्षा वाले वन का मूल्य निर्धारण करना कठिन है।

- जन जागरण अवश्य पैदा करना चाहिए। गैर सरकारी संगठन अन्तर्राष्ट्रीय आधार पर स्वतंत्र रूप से लोगों की जागरूकता बढ़ाते हैं। वे जनमानस के आकर्षण का केंद्र होते हैं और उन्हें प्रेरित करते हैं। वह जनसाधारण के मध्य वाद विवाद के द्वारा पर्यावरणीय उद्देश्यों और संबंधित विकास की वकालत करते हुए पर्यावरणीय सुरक्षा के लिए कुछ चुने हुए क्षेत्र ऐसा दबाव बना सकते हैं कि नीति निर्धारित करने वाले अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें। कई देशों में सरकारी संगठन जन जागरण के काम में जुटे हुए हैं और इस कार्यक्रम में वे निजी संस्थाओं और अन्य समूहों की साझेदारी आमंत्रित करते हैं।

- सार्वजनिक नीति को पुन: सूत्रबद्ध करना चाहिए। विश्वस्त विकास के लिए संगठित योजना आवश्यक है किन्तु इसमें कई रूकावटें हैं, एक रूकावट विखण्डन है जो स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तरों की सरकारों और विभिन्न राष्ट्रों के सामने आती हैं। दूसरी रूकावट पर्यटन उद्योग का बहुआयामी स्वभाव है जो निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के निवेशकों और प्रबंधकों पर आधारित है। कई निवेशक और प्रबंधक वचन बद्धता, प्रबुद्ध स्वार्थ या अच्छे जन सम्पर्क के आधार पर नेतृत्व का प्रयास करते हैं। अन्तत: यह उद्योग जरूरत पड़ने पर लाभ कमाने के साथ-साथ पर्यावरण का भी ख्याल रखेगा।

- मेजबानों और मेहमानों दोनों के व्यवहार में परिवर्तन आना चाहिए। जागरूकता अभियान, पर्यावरणीय शिक्षा, मेजबान प्रशिक्षण और व्यावसायिक शिक्षा द्वारा उत्तरदायित्वपूर्ण पर्यटकों, कार्यकर्ताओं व विकासकों को तथा साथ ही जिम्मेवार मेजबानों को पर्यटन उद्योग के हर स्तर पर विकसित किया जा सकता है।

- पर्यटकों को पर्यटन स्थल के संरक्षण के प्रयासों में सम्मिलित करना।

प्राकृतिक पर्यटकों में उन लोगों को शामिल किया जा सकता है जो अकस्मात वन में घूमने निकल पड़ते, या इनमें प्रवाल रचनाओं की प्रशंसा करने वाले स्क्यूबा गोताखों या पक्षियों का अवलोकन करने और उन्हें सूचीबद्ध करने वाले पर्यटन भी शामिल हो सकते हैं।

किन्तु यह बाजार का एक ऐसा भाग है जो पर्यावरणीय समस्याओं पर विचार कर सकता है। प्राकृतिक पर्यटन की सफलता प्राकृतिक संरक्षण पर आश्रित है। बहुत से उद्यानों को खतरा है और यह उन सभी के लिए संकटपूर्ण है जो प्राकृतिक पर्यटन में रुचि रखते हैं और यह जानते हैं कि प्राकृतिक संसाधन उनके अस्तित्व का आधार हैं।

प्रकृति पर्यटन स्थानों की सुरक्षा और रखरखाव के लिए आय की आवश्यकता होती है जिसका अधिकतर भाग प्रत्यक्ष रूप से प्रवेश शुल्क और उत्पादों की बिक्री से प्राप्त किया जा सकता है। पर्यटक पर्यावरण शिक्षा के लिए बहुत उपयोगी होते हैं अत: उन्हें पर्यावरण संबंधी शिक्षा देनी चाहिए कि उन्हें क्या करना है और क्या नहीं। पर्यटन को प्रकृति संरक्षण और ग्रामीण विकास का साधन बनाने के लिए स्थानीय जन समूह को पर्यटन उद्योग के विकास में सम्मिलित करने का संगठित प्रयास करना चाहिए। जैसे ही अधिकाधिक पर्यटकों का उद्यानों और आरक्षित क्षेत्रों में आगमन होने लगेगा। टूर ऑपरेटरों को अपने ग्राहकों की शिक्षा और उद्यान प्रबंध के लिए दान प्राप्ति के द्वारा इन क्षेत्रों के संरक्षणों में सक्रियता के साथ जुट जाने का अवसर मिलेगा।

पर्यावरणीय गतिविधियों के प्रति जन जागरुकता और जुड़ाव पैदा करने में स्थानीय लोक कलाओं से लेकर आधुनिक इलेक्ट्रानिक मीडिया की एक निर्णायक भूमिका होनी चाहिए। पर्यावरण के संबंध में जन जागरुकता पैदा करने और पर्यावरणीय गतिविधियों और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में लोगों का भागीदार बढ़ाने के लिए, पर्यावरण से जुड़ी शिक्षा की सामग्री जुटानी होगी और आधुनिक जनसंचार माध्यमों को मजबूत बनना होगा ताकि पर्यावरणीय शिक्षा के लिए एक ऐसा संरचना तंत्र निर्मित किया जा सके जिसमें लोगों को शिक्षित किया जा सके और पर्वतीय स्थलों, समुद्री तटों, राष्ट्रीय उद्यानों, अभयारण्यों और बाघ अभयारण्यों आदि में आनेवाले पर्यटकों के लिए शिक्षा सामग्री भी उपलब्ध कराई जा सके।

बोध प्रश्न 2

1) उन महत्वपूर्ण पर्यटन कारकों का पता लगाइए जो पर्यावरण पर प्रतिकुल प्रभाव डालते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यावरणीय ह्रास को कम करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण उपाय बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

6.5 सारांश

प्रकृति पर आधारित पर्यटन के कारण पर्यावरणीय मापदंड पर अक्सर खतरा मंडराने लगता है क्योंकि इस प्रकार का पर्यटन पर्यावरण के बहुत निकट होता है। सरकार लाभ कमाने के लिए पर्यटन का विकास करती है। जिससे पर्यटन उद्योग का विस्तार होता है। पर्यावरण और पर्यटन के बीच एक अंत:संबंध पाया जाता है जो एक दूसरे के मापदंडों को प्रभावित करते हैं किन्तु यदि पर्यटन का विकास

अनियोजित और अनियंत्रित ढंग से हुआ तो कोई भी पर्यावरण पर उसके गंभीर कुप्रभाव को इंकार नहीं कर सकता। पर्यावरण पर पर्यटन के विकास के अनेक प्रभाव पड़ते हैं। अक्सर पर्यटक और पर्यटन को विकसित करने वाले स्थानीय, सामाजिक एवं प्राकृतिक जानकारी के अभाव में स्थानीय पर्यावरण के लिए विनाष्कारी सिद्ध होते हैं। समय और पैसा जैसे संसाधनों की कमी के कारण भी पर्यावरण पर बुरा असर पड़ता है। अत: पर्यावरण संरक्षण के लिए तत्काल आवश्यक उपाय करना अति आवश्यक है जैसे जन जागरुकता पैदा करना और संचार या ज्ञानप्रद प्रकाशनों जैसे पेम्पलेट, विवरणिका आदि के द्वारा पर्यटकों को पर्यावरणीय शिक्षा देना ।

6.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 6.2 के प्रथम दो पैराग्राफ के आधार पर अपना उत्तर लिखिए।

2) भाग 6.1 के अंतिम पैराग्राफ में उल्लिखित कारकों को प्रस्तुत कीजिए।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 6.3 का अंतिम पैराग्राफ देखिए।

2) अपना उत्तर भाग 6.4 के आधार पर लिखिए।

चित्र